भारतीय ज्ञान परम्परा के परिप्रेक्ष्य में सतत शैक्षिक विकास की सैद्धान्तिक रूपरेखा

प्रो. नीलाभ तिवारी

सारांशः - समकालीन वैश्विक अकादमिक विमर्श में सतत विकास (Sustainable Development) और शिक्षाशास्त्र के मध्य अंतर्संबंध एक केंद्रीय विषय बन चुका है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-4 (SDG-4) ने समावेशी शिक्षा और आजीवन अधिगम को सार्वभौमिक प्राथमिकता दी है । तथापि, विकास की वर्तमान वैश्विक संकल्पना मात्र यांत्रिक वृद्धि, भौतिक समृद्धि और लौकिक प्रतिष्ठा तक सिमट गई है, जिसके परिणामस्वरूप मानवीय संवेदनाओं का क्षरण हुआ है । यह शोधपत्र भारतीय ज्ञान परम्परा के तात्विक और दार्शनिक आधारों का उपयोग करते हुए सतत शैक्षिक विकास की एक नवोन्मेषी सैद्धान्तिक रूपरेखा प्रस्तुत करता है। अध्ययन उद्घाटित करता है कि भारतीय दृष्टि में विकास एकरेखीय (Linear) न होकर चक्रीय (Cyclical) और अंतःकरण से उद्भूत होने वाली प्रक्रिया है । तैत्तिरीयोपनिषद् के 'पंचकोश सिद्धांत' और विविध वैदिक सूक्तियों के विश्लेषणात्मक मूल्यांकन के माध्यम से, यह शोध समग्र व्यक्तित्व विकास का एक ऐसा 'आश्रम-आधारित' प्रतिमान प्रस्तुत करता है , जो आधुनिक शैक्षिक एवं पारिस्थितिक चुनौतियों का समाधान करने में पूर्णतः सक्षम है।

कुञ्जीशब्दाः - सतत शैक्षिक विकास, ज्ञानमीमांसा, पंचकोश सिद्धांत, आजीवन अधिगम, चक्रीय विकास, SDG-4. 1.

मानवीय सभ्यता के क्रमिक विकास में 'प्रगति' की अवधारणा निरंतर विमर्श का विषय रही है। उत्तर-आधुनिकतावादी दृष्टिकोण में विकास को प्रायः बाह्य संसाधनों की वृद्धि और यांत्रिक विस्तार का पर्याय मान लिया गया है । इस उपयोगितावादी दृष्टि ने मनुष्य के आत्मीय भावों को हाशिए पर धकेल दिया है। इसके विपरीत, भारतीय अस्तित्ववादी (Ontological) दर्शन में विकास की संकल्पना भौतिक सीमाओं का अतिक्रमण कर चेतना के सर्वोच्च शिखर तक पहुँचने की यात्रा है।

बृहदारण्यक उपनिषद् का यह सुप्रसिद्ध शांति मंत्र इस तात्विक दिशा का मूल उद्घोष है:

"ॐ असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय।"

(बृहदारण्यक उपनिषद -1.3.28)

अर्थात्, असत्य से सत्य की ओर, अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर, और मृत्यु से अमरत्व की ओर गमन ही यथार्थ विकास है ।

पारिस्थितिक सततता (Ecological Sustainability) के संदर्भ में ईशोपनिषद् की यह सूक्ति आधुनिक विकास के अंधे उपभोगवाद पर एक दार्शनिक अंकुश लगाती है:

"ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्॥"

(ईशोपनिषद् - 1)

इस संपूर्ण चराचर जगत में जो कुछ भी है, वह ईश्वर से व्याप्त है। अतः त्यागपूर्वक इसका उपभोग करो; लालच मत करो, यह धन किसका है? यह श्लोक सतत विकास के मूल सिद्धांत—संसाधनों के संरक्षण और अनासक्त उपभोग—का प्राचीनतम प्रमाण है।

2. उद्देश्य -

मूल अवधारणाओं का अध्ययन: भारतीय ज्ञान परम्परा के संदर्भ में 'शिक्षा' की संकल्पना और 'सतत विकास' की अवधारणा का गहन अध्ययन करना ।

साहित्य का संश्लेषण: सतत शैक्षिक विकास के विषय में उपलब्ध अंतर्विषयक (Interdisciplinary) साहित्य का सैद्धांतिक रूप से संश्लेषण करना ।

सैद्धान्तिक रूपरेखा का प्रतिपादन: भारतीय ज्ञान के आधार पर सतत शैक्षिक विकास की एक स्पष्ट अवधारणात्मक और सैद्धान्तिक रूपरेखा (Theoretical Framework) प्रस्तुत करना ।

परिणामों का अभिज्ञान: इस सैद्धांतिक अध्ययन के आधार पर व्यापक दृष्टि से विभिन्न वर्गों में विकास के परिणामों की पहचान करना ।

3. शिक्षा एवं विकास की भारतीय ज्ञानमीमांसा (Epistemology of Education and Development)

3.1 शिक्षा का तात्विक स्वरूप

भारतीय ज्ञान व्यवस्था में 'शिक्षा' मात्र सूचनाओं का संकलन नहीं, अपितु ज्ञान का एक व्यवस्थित तंत्र है । आधुनिक शिक्षा जहाँ व्यक्ति को 'आर्थिक इकाई' बनाती है, वहीं भारतीय दर्शन में शिक्षा का लक्ष्य 'मुक्ति' है।

"सा विद्या या विमुक्तये"

(विष्णु पुराण 1.19.41)

विद्या वही है जो बंधनों से मुक्त करे। इसी विचार का समर्थन करते हुए आधुनिक युग के महान दार्शनिक स्वामी विवेकानंद कहते हैं:

"शिक्षा मनुष्य के भीतर पहले से विद्यमान पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" (Education is the manifestation of the perfection already in man.)

भारतीय दृष्टि में शिक्षा का अधिष्ठान 'अध्यात्म' है और यह अनिवार्यतः 'धर्मानुसारिणी' (सार्वभौमिक नियम और कर्त्तव्य के अनुकूल) होनी चाहिए ।

3.2 विकास की गतिकी (Dynamics of Development):

पाश्चात्य विकास मॉडल मुख्य रूप से बाह्य-प्रेरित, भौतिकवादी और उपभोग-केंद्रित है, जहाँ प्रगति को केवल संसाधनों के विस्तार से मापा जाता है। इसके विपरीत, भारतीय ज्ञान-दृष्टि में विकास को एक गहरे मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूपांतरण के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीय परिप्रेक्ष्य में विकास के तीन प्रमुख सैद्धांतिक आयाम निम्नलिखित हैं:

आंतरिक प्रस्फुटन (Inner Unfoldment): भारतीय दर्शन के अनुसार, विकास कोई ऐसी कृत्रिम प्रक्रिया नहीं है जिसे बाहर से व्यक्ति या समाज पर आरोपित (Impose) किया जा सके। यह मूलतः 'अन्तस्तात्' (भीतर से) आरम्भ होने वाली एक स्वाभाविक और सजीव प्रक्रिया है। जिस प्रकार एक अत्यंत सूक्ष्म बीज में एक विशाल वृक्ष की सम्पूर्ण संभावनाएँ—उसकी शाखाएँ, पत्ते और फल—पहले से ही अव्यक्त रूप में अंतर्निहित होती हैं, ठीक उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य की विकास यात्रा उसके निज-स्वभाव और आंतरिक चेतना से प्रारंभ होती है। बाहरी शिक्षा व्यवस्था और पर्यावरण केवल उस बीज को पल्लवित होने के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ प्रदान करते हैं, परंतु यथार्थ विकास सदैव स्व-प्रेरित और आंतरिक शक्तियों का ही पूर्ण प्रस्फुटन होता है।

2. कौशल और स्वधर्म (Skill and Svadharma): सतत विकास के लिए केवल श्रम पर्याप्त नहीं है, बल्कि कर्म में उत्कृष्टता और अपने 'स्वधर्म' (स्वभाव के अनुकूल कार्य) की पहचान अत्यंत आवश्यक है। श्रीमद्भगवद्गीता इसी लोकोपकारी आदर्श को स्पष्ट करते हुए उद्घोष करती है: "योगः कर्मसु कौशलम्" (श्रीमद्भगवद्गीता 2.50) अर्थात् कर्मों में पूर्ण कुशलता और एकाग्रता ही योग है। भारतीय दृष्टि में आधुनिक 'कौशल विकास' (Skill Development) केवल आजीविका या आर्थिक लाभ का साधन मात्र नहीं है, बल्कि यह एक गहन आध्यात्मिक साधना है। जब व्यक्ति अपने स्वधर्म को पहचान कर पूरी कुशलता से कार्य करता है, तो वह व्यक्तिगत पूर्णता के साथ-साथ सामाजिक प्रगति भी सुनिश्चित करता है।

3. चक्रीयता (Cyclical Nature): आधुनिक पाश्चात्य विकास-क्रम 'एकरेखीय' (Linear) है, जिसका आधार अंतहीन उत्पादन और अंधाधुंध उपभोग है। यह एकरेखीय दृष्टिकोण शाश्वत अशान्ति, उद्विग्नता (Anxiety) और गंभीर पर्यावरणीय संकटों को जन्म देता है, क्योंकि इस दौड़ का कोई अंतिम विश्राम बिंदु नहीं होता। इसके सर्वथा विपरीत, भारतीय विकास-क्रम ऋतुओं, वृक्षों और प्रकृति के समान पूर्णतः 'चक्रीय' (Cyclical) है। यह चक्रीय विकास आत्मतत्त्व (मूल स्रोत) से प्रारंभ होकर, लौकिक कर्तव्यों का निर्वहन करते हुए, अंततः पुनः आत्मतत्त्व में ही पूर्णता और विश्राम प्राप्त करता है। यह चक्रीयता ही मनुष्य और प्रकृति के मध्य शाश्वत संतुलन और वास्तविक सततता (Sustainability) का निर्माण करती है।

4. सतत शैक्षिक प्रतिमान: पंचकोश सैद्धांतिक रूपरेखा (The Panchakosha Framework)

तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मानन्दवल्ली में वर्णित 'पंचकोश सिद्धांत' व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास का एक सूक्ष्म और मनोवैज्ञानिक ढाँचा प्रस्तुत करता है:

आत्मा / कोश	स्वरूप	शैक्षिक आयाम (विकास माध्यम)	प्रतिफल (लक्ष्य)
---	---	---	---
अन्नमय कोश	भौतिक शरीर	शारीरिक शिक्षा	सहनशीलता, अंगों की उचित वृद्धि, निरामय तंत्र ।
प्राणमय कोश	जीवन ऊर्जा (प्राणाः)	योग शिक्षा	ऊर्जा संतुलन, श्रमाय बल की एकाग्रता, आत्मविश्वास ।
मनोमय कोश	संकल्प-विकल्पात्मक मन	संगीत/कला शिक्षा	शांति, काम-क्रोध पर नियंत्रण, दया और करुणा का विकास ।
विज्ञानमय कोश	बुद्धि, तर्क, निरीक्षण	शास्त्र शिक्षा	तीक्ष्ण विचार शक्ति, विवेक प्राप्ति, अभय और वैचारिक स्वातंत्र्य ।
आनंदमय कोश	संस्कार/चित्त शुद्धि	नैतिक-आध्यात्मिक शिक्षा	प्रेमानुभूति, सर्जनशीलता, परमानंद और अंततः मुक्ति ।

किसी भी सुदृढ़ शैक्षिक व्यवस्था के लिए एक स्पष्ट सैद्धांतिक रूपरेखा (Theoretical Framework) का होना अनिवार्य है। आधुनिक उपयोगितावादी शिक्षा प्रणाली जहाँ केवल बौद्धिक और आर्थिक मापदंडों पर केंद्रित है, वहीं तैत्तिरीयोपनिषद् की ब्रह्मानन्दवल्ली से निगमित 'पंचकोश सिद्धांत' सतत शैक्षिक विकास का एक अत्यंत सूक्ष्म, मनोवैज्ञानिक और बहुआयामी ढाँचा प्रस्तुत करता है।

इस सैद्धान्तिक रूपरेखा के अंतर्गत मानव व्यक्तित्व और उसकी अधिगम प्रक्रिया (Learning Process) को पाँच क्रमिक और ऊर्ध्वगामी सोपानों (परतों) में संरचित किया गया है। यही पाँच सोपान इस विकास मॉडल के मुख्य स्तंभ हैं:

प्रथम सोपान: अन्नमयात्मक आधार (Physical & Ecological Foundation)

तात्पर्य: यह रूपरेखा का प्रथम और स्थूल स्तर है, जो मनुष्य के भौतिक शरीर और उसके पर्यावरण से संबंधित है।

शैक्षिक अनुप्रयोग: इस स्तर पर 'शारीरिक शिक्षा' को माध्यम बनाया जाता है।

सतत प्रतिफल: इसका लक्ष्य शिक्षार्थी में शारीरिक सहनशीलता, अंगों की आनुपातिक वृद्धि और एक निरामय (रोगमुक्त) तंत्र विकसित करना है। यह स्तर व्यक्ति को पारिस्थितिकी (Ecology) के साथ भौतिक रूप से जोड़ता है।

द्वितीय सोपान: प्राणमयात्मक गतिकी (Vital & Energetic Dynamics)

तात्पर्य: अन्नमय आधार के पश्चात यह जीवन-ऊर्जा (प्राण, अपान आदि) का सूक्ष्म स्तर है।

शैक्षिक अनुप्रयोग: 'योग शिक्षा' एवं प्राणायाम के माध्यम से इस कोश को जाग्रत किया जाता है।

सतत प्रतिफल: यह शिक्षा प्रणाली में ऊर्जा के समुचित प्रबंधन, श्रम के प्रति एकाग्रता और अटूट आत्मविश्वास की स्थापना करता है, जो आजीवन सक्रियता (Lifelong vitality) के लिए अनिवार्य है।

तृतीय सोपान: मनोमयात्मक संतुलन (Psychological & Emotional Equilibrium)

तात्पर्य: यह व्यक्ति के संकल्प और विकल्प से युक्त चंचल मन का मनोवैज्ञानिक आयाम है। आधुनिक शिक्षा में इसी कोश की सर्वाधिक उपेक्षा हुई है, जिससे अवसाद और चिंता जैसी समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं।

शैक्षिक अनुप्रयोग: इस सैद्धांतिक रूपरेखा में 'संगीत और कला शिक्षा' को मनोमय विकास का अस्त्र माना गया है।

सतत प्रतिफल: इसका उद्देश्य मानसिक शांति स्थापित करना, काम-क्रोध जैसी नकारात्मक प्रवृत्तियों का नियमन करना तथा शिक्षार्थी में दया, करुणा और सहिष्णुता के मूल्यों का विकास करना है।

चतुर्थ सोपान: विज्ञानमयात्मक प्रज्ञा (Intellectual & Cognitive Praxis)

तात्पर्य: यह मात्र डेटा रटने की क्षमता नहीं, बल्कि विशुद्ध प्रज्ञा, तर्क और समालोचनात्मक निरीक्षण (Critical Observation) का स्तर है।

शैक्षिक अनुप्रयोग: 'शास्त्र-शिक्षा' (गहन अकादमिक और दार्शनिक विमर्श) के द्वारा इस आयाम को परिष्कृत किया जाता है।

सतत प्रतिफल: यह शिक्षार्थी में तीक्ष्ण विचार-शक्ति, सही और गलत के मध्य 'विवेक' (Discernment), निर्भयता (अभय) और वैचारिक स्वतंत्रता की स्थापना करता है।

पंचम सोपान: आनंदमयात्मक पूर्णता (Spiritual & Holistic Culmination)

तात्पर्य: यह इस सैद्धांतिक रूपरेखा का सर्वोच्च और अंतिम शिखर है, जो विशुद्ध चेतना और शुद्ध संस्कारों (चित्त) का निवास है।

शैक्षिक अनुप्रयोग: 'नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा' के माध्यम से इस कोश की अनुभूति की जाती है।

सतत प्रतिफल: शिक्षा का यह अंतिम चरण व्यक्ति को केवल आजीविका तक सीमित नहीं रखता, अपितु उसमें सर्जनशीलता (Creativity), सार्वभौमिक प्रेमानुभूति, परमानंद और अंततः 'मुक्ति' (अज्ञान और बंधनों से स्वतंत्रता) का मार्ग प्रशस्त करता है।

संक्षेप में, यह 'पंचकोश सैद्धांतिक ढाँचा' यह प्रमाणित करता है कि सतत शैक्षिक विकास एक खंडित या एकांगी (Isolated) प्रक्रिया नहीं है। यह अन्नमय (स्थूल) से आनंदमय (सूक्ष्म) तक की एक निरंतर, चक्रीय और सर्वांगीण यात्रा है, जो आधुनिक शिक्षा को उसके वर्तमान यांत्रिक स्वरूप से मुक्त कर एक मानवीय और आध्यात्मिक पूर्णता प्रदान करने का सबसे प्रामाणिक मार्ग है।

5. वैश्विक लक्ष्य एवं आजीवन अधिगम (Global Goals and Lifelong Learning)

संयुक्त राष्ट्र का SDG-4 जिन आदर्शों की बात करता है, वे ऋग्वेदिक काल से ही भारतीय चेतना में गुँथे हुए हैं। नवाचार और वैश्विक ज्ञान के प्रति खुलेपन का प्रतीक है यह सूक्ति:

"आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" (ऋग्वेद 1.89.1)

(हमारे पास चारों ओर से कल्याणकारी विचार आते रहें।)

SDG-4 के प्रमुख घटकों का भारतीय संदर्भ :

समान गुणवत्ता: "सर्वे भद्राणि पश्यन्तु" (सभी कल्याण को देखें) समतामूलक शिक्षा का आदर्श है ।

समावेशन (Inclusion): कठोपनिषद् का शांति मंत्र—"सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै" (हम साथ रक्षित हों, साथ पोषित हों, साथ पराक्रम करें)—समावेशी शिक्षा का अकाट्य सूत्र है ।

आजीवन अधिगम (Lifelong Learning): "यावत् जीवमधीते विप्रः" (ज्ञान-पिपासु आजीवन सीखता है) की सूक्ति शिक्षा को चक्रीय सिद्ध करती है ।

भारतीय दृष्टि में शिक्षा गर्भावस्था के संस्कारों से आरम्भ होकर, गृहस्थाश्रम में अर्थ-उपार्जन और कौशल-विकास से होते हुए, वानप्रस्थ और संन्यास (मुक्ति) तक अनवरत चलने वाली यात्रा है ।

5. निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत समालोचनात्मक अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि भारतीय ज्ञान संदर्भ में शिक्षा मात्र भौतिक वृत्ति (रोजगार) प्राप्त करने का साधन नहीं है, अपितु यह चराचर जगत में सामंजस्य स्थापित करने वाला एक सुव्यवस्थित तंत्र है । भारतीय विकास मॉडल आरोपित या एकरेखीय न होकर, एक स्वतः स्फूर्त, चक्रीय और समन्वित प्रक्रिया है । समकालीन वैश्विक पारिस्थितिक और मनोवैज्ञानिक संकटों के निवारण हेतु आधुनिक शिक्षा प्रणाली में 'परा' (आध्यात्मिक) और 'अपरा' (लौकिक) विद्या का समन्वय अनिवार्य है । ज्ञानार्जन के उपकरणों को सुदृढ़ कर पंचकोशात्मक विकास के माध्यम से परम-ज्ञान की ओर अग्रसर होना ही सतत शैक्षिक विकास की सबसे प्रामाणिक सैद्धान्तिक रूपरेखा है।

मूल अवधारणाओं का स्पष्टीकरण: अध्ययन के परिणामस्वरूप यह सिद्ध हुआ कि भारतीय ज्ञान-मीमांसा में 'शिक्षा' केवल बाह्य सूचनाओं का संकलन या वृत्ति (रोजगार) प्राप्ति का साधन नहीं है, अपितु यह एक आत्मतत्त्वनिष्ठ और धर्मानुसारिणी व्यवस्था है । साथ ही, 'सतत विकास' की अवधारणा आधुनिक एकरेखीय (linear) और भौतिक वृद्धि से सर्वथा भिन्न है; यह एक स्वतः स्फूर्त, आंतरिक (अन्तस्तात्) और चक्रीय (cyclical) प्रक्रिया है जिसमें तुलना और अस्वस्थ स्पर्धा का कोई स्थान नहीं है ।

साहित्य का सफल संश्लेषण: अंतर्विषयक साहित्य के संश्लेषण से यह परिणाम प्राप्त हुआ कि आधुनिक वैश्विक नीतियां, विशेषकर संयुक्त राष्ट्र का सतत विकास लक्ष्य-4 (समान गुणवत्ता, समावेशी शिक्षा और आजीवन अधिगम), भारतीय वाङ्मय के मूल सिद्धांतों के साथ पूर्णतः संरेखित हैं । अध्ययन ने स्पष्ट किया कि आधुनिक सस्टेनेबिलिटी के सूत्र प्राचीन श्रुतियों (यथा- 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु', 'संगच्छध्वं संवदध्वं' और 'यावत् जीवमधीते विप्रः') में पहले से ही समग्र और वैज्ञानिक रूप में विद्यमान हैं ।

सैद्धान्तिक रूपरेखा का निर्माण: इस शोध के फलस्वरूप सतत शैक्षिक विकास का एक अत्यंत सुदृढ़ और व्यावहारिक मॉडल—'पंचकोश आधारित समग्र विकास'—उभर कर सामने आया है । यह सिद्ध हुआ कि शिक्षा को केवल बौद्धिक स्तर तक सीमित न रखकर शारीरिक (अन्नमय), प्राणिक (प्राणमय), मानसिक (मनोमय), और आध्यात्मिक (आनंदमय) आयामों तक विस्तारित करना आवश्यक है । इसके अतिरिक्त, जीवनपर्यन्त अधिगम को सुनिश्चित करने के लिए 'गर्भावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक' की एक अटूट जीवन-चक्र आधारित (आश्रम-व्यवस्था) रूपरेखा स्थापित की गई ।

विविध वर्गों में परिणामों का अभिज्ञान:

प्रस्तावित सैद्धांतिक रूपरेखा को लागू करने पर विभिन्न स्तरों पर निम्नलिखित सुस्पष्ट परिणाम परिलक्षित होते हैं:

वैयक्तिक स्तर पर: प्रतिस्पर्धा और नैराश्य से मुक्ति तथा व्यक्ति का पञ्चात्मक समग्र विकास।

पारिवारिक स्तर पर: संस्कारों के दृढ़ हस्तांतरण के माध्यम से सुदृढ़ परिवार की प्रतिष्ठा ।

सामाजिक स्तर पर: एक समृद्ध, सुसंस्कृत और ऋण-भाव (कृतज्ञता) से युक्त समाज का निर्माण ।

वैश्विक/पारिस्थितिक स्तर पर: चराचर जगत में सामंजस्य की स्थापना और एक संकटमुक्त विश्व (Crisis-free world) का विकास ।

सन्दर्भग्रन्थसूची :-

Bhagavad-Gita As It Is. Trans. A.C. Bhaktivedanta Swami Prabhupada. Bhaktivedanta Book Trust, 1986.

Radhakrishnan, Sarvepalli, trans. The Principal Upaniṣads. HarperCollins Publishers, 1953. (Includes translations and commentaries on Isha, Katha, Brihadaranyaka, and Taittiriya Upanishads).

Swami Vivekananda. The Complete Works of Swami Vivekananda. Vol. 4, Advaita Ashrama, 1989.

United Nations. "Goal 4: Ensure Inclusive and Equitable Quality Education and Promote Lifelong Learning Opportunities for All." Department of Economic and Social Affairs, 2015, https://sdgs.un.org/goals/goal4.

Vishnu Purana. Trans. H.H. Wilson. Punthi Pustak, 1961.

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नासिक परिसर